ऐसे—ऐसे

विष्णु प्रभाकर

मुख्य बिंदु

यह पाठ एक हास्य एकांकी है।

पाठ का पात्र मोहन अपना छुट्टियों का काम करना भूल जाता है।

डाँट से बचने के लिए वह पेट दर्द का बहाना बनाता है।

माँ–पिताजी, पड़ोसी–डॉ0 सभी उसके ऐसे–ऐसे बीमारी को समझने का प्रयास करते हैं।

अंत में मोहन के मास्टरजी पेट दर्द का कारण बताते हैं।

और पूरा पाठ हँसी में बदल जाता है।

पाठ का सार

'ऐसे–ऐसे' एकांकी विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखी गई है। इस एकांकी में मोहन नामक एक बच्चे के बहाने का वर्णन है जो गृहकार्य पूरा न होने के कारण करता है। मोहन को स्कूल खुलने के दिन अपने होमवर्क की याद आती है। तब कक्षा में डाँट से बचने के लिए वह पेट दर्द का बहाना करता है। उसके बहाने से उसके माता–पिता, पड़ोसी, वैद्य सभी बहुत परेशान होते हैं। सभी अपनी–अपनी दवाइयाँ बताते हैं। पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अंत में मास्टरजी मोहन के घर आते हैं और उसकी इस समस्या का समाधान करते हैं। उसके माता–पिता को कुछ समझ नहीं आता और सभी हँसने लगते हैं।